19
आगम

19.1 भूमिका

आपने पाठ 18 में व्यष्टिगत अर्थशास्त्र में प्रयुक्त लागत की अवधारणा के बारे में पढ़ा। इस पाठ में आप आगम (Revenue) की अवधारणा के बारे में पढ़ेंगे। यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आगम और लागत की अवधारणाओं के पीछे हमारा उद्देश्य यह जानना है कि अर्थशास्त्र में लाभ किस प्रकार मालूम किया जाता है। आप यह जान चुके हैं कि उत्पादक आम तौर पर अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहते हैं। आगम से सम्बन्धित विभिन्न माप हम इसी संदर्भ में पढ़ेंगे।

19.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- आगम की अवधारणा का अर्थ बता सकेंगे;
- कुल आगम, औसत आगम और सीमान्त आगम की अवधारणाओं को समझा सकेंगे;
- कीमतों व प्रत्येक कीमत पर वस्तु की बिक्री के आंकड़ों से कुल आगम मालूम कर सकेंगे;
- कुल आगम के आंकड़ों से, औसत आगम मालूम कर सकेंगे;
- औसत आगम के आंकड़ों से, कुल आगम मालूम कर सकेंगे;
- कुल आगम के आंकड़ों से, सीमान्त आगम मालूम कर सकेंगे;
- सीमान्त आगम के आंकड़ों से, कुल आगम मालूम कर सकेंगे;
- औसत आगम के आंकड़ों से, सीमान्त आगम मालूम कर सकेंगे;
- सीमान्त आगम के आंकड़ों के आधार पर, कुल आगम और औसत आगम मालूम कर सकेंगे;
- आगम और लाभ में अंतर कर सकेंगे;

19.3 आगम का अर्थ

उत्पादक या फर्म वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन, उन्हें बाजार में बेचने के लिए करते हैं। वस्तु को बेचने से होने वाली प्राप्ति को, आगम (Revenue) कहा जाता है।

उदाहरण के तौर पर मान लीजिए, रेडियो का उत्पादन करने वाली फर्म प्रतिदिन 2 रेडियो बनाती है और 200 रुपए प्रति रेडियो के बेचने से कुल प्राप्ति 400 रुपए है। यह दो रेडियो की बिक्री से प्राप्त आगम है।

व्यष्टिगत अर्थशास्त्र में हम आगम के निम्नलिखित तीन मापों के बारे में पढ़ते हैं:

(अ) कुल आगम (Total Revenue or TR)

(ब) औसत आगम (Average Revenue or AR)

(स) सीमान्त आगम (Marginal Revenue or MR)

19.4 कुल आगम

वस्तु के उत्पादन को बेचने से मिली कुल प्राप्तियां उस वस्तु का कुल आगम (TR) कहलाती हैं। वस्तु की उत्पादित और बेची गयी मात्रा (Quantity) को उसकी प्रति इकाई कीमत (Price) से गुणा कर देने पर कुल आगम प्राप्त होता है।

कुल आगम = उत्पादन की मात्रा × प्रति इकाई कीमत

या $TR = Q \times P$

उदाहरण के लिए, रेडियो फर्म के कुल आगम के बारे में तालिका 19.1 में निम्नलिखित सूचना दी गयी है:

तालिका 19.1

रेडियो फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत व कुल आगम

उत्पादन (इकाइयां) (Q)	कीमत (रु. में) (P)	कुल आगम (रु. में) (उत्पादन × मूल्य) (Q×P)
1	200	200 (1×200)
2	200	400 (2×200)
3	200	600 (3 × 200)
4	200	800 (4 × 200)
5	200	1000 (5 × 200)

फर्म द्वारा 2 रेडियो बेचने पर कुल आगम है:

कुल आगम = उत्पादन × मूल्य या TR = Q × P

= 2 × 200 रुपए = 400 रुपए

अतः स्पष्ट है कि फर्म का कुल आगम और उत्पादन की मात्रा, वस्तु की प्रति इकाई कीमत पर आधारित होता है।

रेडियो फर्म के उदाहरण में हमने देखा कि फर्म चाहे कितनी भी मात्रा बेचे, रेडियो की प्रति इकाई कीमत एक जैसी रहती है। यह केवल एक प्रकार के ऐसे बाजार की स्थिति है, जिसमें उत्पादन घटने या बढ़ने का बाजार कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। व्यवहार में बाजार की एक और स्थिति देखने में आती है जिसमें यदि फर्म वस्तु की अधिक मात्रा बेचना चाहती है तो वह ऐसा केवल उसकी प्रति इकाई कीमत कम करके ही कर सकती है। फर्म को ग्राहकों को आकर्षण देना पड़ता है ताकि वह वस्तु को अधिक मात्रा खरीदें।

वस्तु की घटी हुई कीमत ग्राहक के लिए काफी बड़ा आकर्षण होती है। यदि आप कोई वस्तु थोक में खरीदें तो उसे आप प्रति इकाई कम कीमत पर खरीद सकते हैं। आप पढ़ चुके हैं कि कम कीमत पर उपभोक्ता प्रायः अधिक मांग करते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आप एक साथ बिजली के 4 पंखे खरीदें तो दुकानदार आपको कुछ कटौती दे सकता है। यदि आप केवल एक ही पंखा खरीदते हैं तो आपको अधिक कीमत देनी पड़ती है व 4 पंखे खरीदने पर वह आपसे प्रति पंखा कम कीमत लेता है।

बाजार की कैसी भी स्थिति हो कुल आगम या अन्य कोई आगम को ज्ञात करने की विधि एक जैसी ही रहती है।

उदाहरण के लिए तालिका 19.2 को देखिए:

तालिका 19.2

कमीजें बनाने वाली फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत व कुल आगम

उत्पादन (मात्राएं) (Q)	कीमत (रु. में) (P)	कुल आगम (रु. में) (TR)
1	100	100
2	90	180
3	80	240
4	70	280
5	60	300
6	50	300
7	40	280

आप तालिका 19.2 में देखेंगे कि कुल आगम ज्ञात करने की विधि तो एक जैसी है लेकिन इस स्थिति में कुल आगम की दर में अन्तर आ जाता है। जब उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत एक जैसी रहती है, तो उत्पादन बढ़ने के कारण कुछ आगम में होने वाली वृद्धि भी एक जैसी रहती है (देखिए तालिका 19.1)। इसके विपरीत जब उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ कीमत गिरती है तो कुल आगम में वृद्धि भी गिरती है (देखिए तालिका 19.2)।

पाठगत प्रश्न 19.1

सही उत्तर पर सही का (✓) चिन्ह लगाइए:

(i) आगम -
(अ) लाभ है।
(ब) कर है
(स) बिक्री से प्राप्ति है।

(ii) वस्तु की बिक्री से प्राप्त कुल आगम-
(अ) कुल लागत है।
(ब) कुल लाभ है।
(स) बिक्री से कुल प्राप्ति है।

(iii) जब उत्पादन की कितनी भी मात्रा एक निश्चित कीमत पर बेची जा सकती है तो उत्पादन की अतिरिक्त इकाइयों को बेचने के कारण कुल आगम में होने वाली वृद्धि पिछली वृद्धि-
(अ) से कम होती है।
(ब) से अधिक होती है
(स) के समान होती है।

(iv) यदि उत्पादन की अधिक मात्रा कीमत कम करके बेची जाती है तो कुल आगम में होने वाली वृद्धि पिछली वृद्धि:-
(अ) से कम होती है।
(ब) से अधिक होती है।
(स) के समान होती है।

19.5 औसत आगम

वस्तु की बिक्री से प्राप्त होने वाली औसत प्राप्ति, औसत आगम (AR) कहलाती है। कुल आगम को कुल उत्पादन से भाग देने पर औसत आगम प्राप्त होती है। तालिका 19.3 को देखिए:

$$\text{औसत आगम} = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{कुल उत्पादन}} \quad \text{या} \quad AR = \frac{TR}{Q}$$

तालिका 19.3

रेडियो फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत, कुल आगम व औसत आगम

उत्पादन (मात्रा) (Q)	कीमत (रुपए में) (P)	कुल आगम (रुपए में) (TR)	औसत आगम (रु. में) (कुल आगम/उत्पादन) (AR=TR/Q)
1	200	200	200 (200÷1)
2	200	400	200 (400÷2)
3	200	600	200 (600÷3)
4	200	800	200 (800÷4)
5	200	1000	200 (1000÷5)

तालिका 19.3 में उत्पादन की दो इकाइयों से प्राप्त कुल आगम 400 रुपए है। अतः

$$\text{औसत आगम} = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{कुल उत्पादन}} \quad \text{या} \quad AR = \frac{TR}{Q} = \frac{400}{2} = 200 \text{ रुपए}$$

रेडियो की एक इकाई की कीमत भी 200 रुपए है। तालिका 19.3 में उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर औसत आगम और प्रति इकाई कीमत एक समान है। सामान्यतः उत्पादक एक निश्चित समय में उत्पादन की सभी इकाइयों को एक ही मूल्य पर बेचता है। इसलिए उसकी औसत आगम और कीमत एक समान होती है। औसत आगम और कीमत में समानता हम निम्नलिखित रूप में दिखा सकते हैं:

$$\text{औसत आगम} = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{कुल उत्पादन}} \quad AR = \frac{TR}{Q} \qquad \text{.......(i)}$$

$$\text{कुल आगम } (TR) = \text{ कुल उत्पादन } Q \times P \text{ कीमत} \qquad \text{........(ii)}$$

कुल आगम का मान समीकरण (i) में रखने पर

$$\text{औसत आगम } (TR) = \frac{\text{कुल आगम } (TR)}{\text{कुल उत्पादन } (O)} \quad \text{या} \quad \frac{\text{कुल उत्पादन } (Q) \times (P) \text{ कीमत}}{\text{कुल उत्पादन } (Q)} = \text{कीमत}(P)$$

$$\text{अतः औसत आगम } (AR) = \text{ कीमत } (P)$$

यह सम्बन्ध सभी प्रकार के बाजारों में पाया जाता है। तालिका 19.3 में ऐसा बाजार है जिसमें उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कीमत स्थिर रहती है। तालिका 19.4 में ऐसा बाजार है, जिसमें वस्तु की अधिक मात्रा कीमत कम करके ही बेची जा सकती है।

तालिका 19.4

कमीजें बनाने वाली फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत, कुल आगम और औसत आगम

उत्पादन (मात्रा) (Q)	कीमत (रुपए में) (P)	कुल आगम (रुपए में) (Q×P)	औसत आगम (रुपए में) (AR)
1	100	100	100
2	90	180	90
3	80	240	80
4	70	280	70
5	60	300	60
6	50	300	50
7	40	280	40

तालिका 19.4 में जो बाजार की स्थिति दिखायी गयी है उसमें उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर औसत आगम और कीमत एक समान है।

पाठगत प्रश्न 19.2

सही उत्तर पर सही (✓) का चिन्ह लगाइए:

(i) वस्तु के उत्पादन की बिक्री से प्राप्त औसत आगम समान होती है:

(अ) कुल आगम को कुल उत्पादन से भाग देने के।

(ब) कुल आगम में शुद्ध वृद्धि के।

(ii) जब उत्पादन की कितनी भी मात्रा एक निश्चित कीमत पर बेची जा सकती है तो औसत आगम:

(अ) गिरती है।

(ब) बढ़ती है।

(स) स्थिर रहती है।

3. जब अधिक उत्पादन कीमत कम करके ही बेचा जा सकता है, तो उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ औसत आगम:

(अ) गिरती है।

(ब) बढ़ती है।

(स) स्थिर रहती है।

19.6 सीमान्त आगम

आप सीमान्त लागत की अवधारणा से परिचित हैं। सीमान्त आगम की परिभाषा का आधार भी वैसा ही है। वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने के कारण कुल आगम में होने वाली शुद्ध वृद्धि को सीमान्त आगम (MR) कहते हैं। तालिका 19.5 को देखिए।

तालिका 19.5

रेडियो फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत, कुल आगम और सीमांत आगम

उत्पादन (मात्रा) (Q)	कीमत (रुपए में) (P)	कुल आगम (रुपए में) (TR)	सीमान्त आगम (रुपए में) (MR)
1	200	200	200 (200-0)
2	200	400	200 (400-200)
3	200	600	200 (600-400)
4	200	800	200 (800-600)
5	200	1000	200 (1000-800)
6	200	1200	200 (1200-1000)

तालिका 19.5 में एक रेडियो को बेचने से प्राप्त कुल आगम 200 रूपए और 2 रेडियो को बेचने से प्राप्त कुल आगम 400 रूपए है:

अतः 2 रेडियो का सीमान्त आगम = 2 रेडियो का कुल आगम - 1 रेडियो का कुल आगम

रेडियो की बिक्री एक इकाई और बढ़ाकर उत्पादक ने कुल आगम में 200 रूपए की वृद्धि कर ली। ,अतिरिक्त इकाई बेचने के कारण कुल आगम में होने वाली यह वृद्धि सीमान्त आगम कहलाती है।

अब हम बाजार की दूसरी स्थिति को लेते हैं। इसमें वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने के लिए कीमत को कम करना पड़ता है। देखिए तालिका 19.6।

तालिका 19.6

रेडियो फर्म का उत्पादन, बिक्री कीमत, कुल आगम और सीमांत आगम

उत्पादन (मात्रा) (Q)	कीमत (रुपए में) (P)	कुल आगम (रुपए में) (TR)	सीमान्त आगम (रुपए में) (MR)
1	100	100	100 (100-0)
2	90	180	80 (180-100)
3	80	240	60 (240 180
4	70	280	40 (280-240)
5	60	300	20 (300-280)
6	50	300	0 (300-300)
7	40	280	-20 (280-300)

तालिका 19.6 में दिखाया गया है कि उत्पादक कमीज की कीमत घटाकर, ग्राहकों को अधिक मात्रा में कमीजें खरीदने के लिए आकर्षित करता है। वह कीमत 100 रुपए से कम करके 90 रुपए कर देता है ताकि उपभोक्ता एक की बजाए दो कमीजें खरीदें। '2' कमीजों के बेचने से उसे 180 रुपए कुल आगम प्राप्त होता है। अगर उसने केवल एक ही कमीज बेची होती तो उसे 100 रुपए का कुल आगम मिलता। एक और कमीज बेचकर उसने अपने कुल आगम में 80 रुपए की वृद्धि कर ली। यही उसका 2 कमीजों की बिक्री पर प्राप्त सीमान्त आगम है। इसी प्रकार हम 3 कमीजों पर या अधिक कमीजों पर सीमान्त आगम ज्ञात कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 19.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(i) वस्तु की एक इकाई अधिक बेचने के कारण.................... में शुद्ध वृद्धि सीमान्त आगम कहलाती है।

(ii) एक वस्तु की बिक्री 3 इकाई से बढ़कर 4 इकाई हो जाती है, परिणामस्वरूप कुल आगम 100 रुपए से बढ़कर 125 रुपए हो जाता है। सीमान्त आगम.................... रुपए है।

(iii) जब वस्तु की अधिक बिक्री कीमत कम करके ही की जा सकती है तो वस्तु की अतिरिक्त इकाई बेचने से सीमान्त आगम पहले की अपेक्षा.................... हो जाता है।

(iv) जब वस्तु की अधिक बिक्री एक निश्चित कीमत पर की जा सकती हो तो वस्तु की अतिरिक्त इकाई बेचने से सीमान्त आय.................... रहती है।

(v) जब कुल आगम गिरता है, तो सीमान्त आगम.................... होता है।

19.7 आगम और लाभ

आगम, जैसा कि आप पढ़ चुके हैं, वस्तु की बिक्री से प्राप्ति को कहते हैं। लाभ (Profit), आगम (Revenue) की लागत (Cost) पर अधिकता को कहते हैं। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि लाभ, आगम से भिन्न है। हम इस अंतर पर जोर इसलिए डाल रहे हैं क्योंकि व्यवहार में इस बात की संभावना रहती है कि आम आदमी द्वारा लाभ और आगम को एक ही न समझ लिया जाए।

19.8 कुल आगम, सीमान्त आगम तथा औसत आगम ज्ञात करने के कुछ उदाहरण

उदाहरण 1: कुल आगम (TR) और कुल उत्पादन (Q) से औसत आगम (AR) या कीमत (P) ज्ञात करने के लिए हम कुल आगम को कुल उत्पादन से भाग करते हैं। यह तरीका तालिका 19.7 में दिखाया गया है।

तालिका 19.7

Q	TR	AR=TR/Q
1	11	11
2	16	8
3	21	7
4	24	6

उदाहरण 2: सीमान्त आगम (MR) से कुल आगम (TR) ज्ञात करने के लिए हम एक अतिरिक्त इकाई को बेचने से प्राप्त सीमान्त आगम को उत्तरोत्तर इकाइयों में जोड़ते हुए चले जाते हैं। ऐसा तालिका 19.8 में दिखाया गया है।

तालिका 19.8

Q	MR	TR
1	7	7
2	5	12 (7+5)
3	3	15 (7+5+3)
4	2	17 (7+5+3+2)
5	1	18 (7+5+3+2+1)
6	-1	17 (7+5+3+2+1-1)

उदाहरण 3: औसत आगम (AR) से कुल आगम (TR) ज्ञात करने के लिए हम औसत आगम (AR) को कुल उत्पादन (Q) से गुणा करते हैं। ऐसा तालिका 19.9 में दिखाया गया है।

तालिका 19.9

Q	AR	Q×AR=TR
1	9	9
2	8	16
3	7	21
4	[illegible]	24
5	5	25

उदाहरण 4: औसत आगम (AR) से सीमान्त आगम (MR) ज्ञात करने के लिए, हम पहले कुल आगम (TR) ज्ञात करते हैं। कुल आगम से सीमान्त आगम ज्ञात करने के लिए 'दिए गए उत्पादन स्तर' के कुल आगम में से 'एक इकाई कम उत्पादन स्तर' के कुल आगम क घटा देते हैं। ऐसा तालिका 19.10 में दिखाया गया है।

तालिका 19.10

Q	AR	Q×AR=TR	MR
1	10	10	–
2	8	16	6
3	7	21	5
4	6	24	3
5	4	20	-4

उदाहरण 5: सीमान्त आगम (MR) से औसत आगम (AR) ज्ञात करने के लिए हम पहले कुल आगम (TR) ज्ञात करते हैं। कुल आगम को कुल उत्पादन से भाग देने पर औसत आगम ज्ञात हो जाता है। ऐसा तालिका 19.11 में दिखाया गया है।

तालिका 19.11

Q	MR	TR	TR/Q = AR
1	80	80	80
2	70	150	75
3	60	210	70
4	30	240	60
5	10	250	50

याद रखिए

- वस्तु की बिक्री से प्राप्ति आगम कहलाती है।
- कुल उत्पादन को बिक्री कीमत से गुणा कर देने पर कुल आगम प्राप्त होता है।
- कुल आगम को कुल उत्पादन से भाग कर देने पर औसत आगम प्राप्त होता है।
- औसत आगम और कीमत एक समान होते हैं।
- उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई की बिक्री से प्राप्त अतिरिक्त आगम सीमान्त आगम कहलाता है।
- यदि उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत एक हो तो इन स्तरों पर सीमान्त आगम और औसत आगम एक समान होते हैं।
- यदि वस्तु की अधिक मात्रा कीमत कम करके ही बेची जा सकती हो, तब जैसे-जैसे कीमत कम की जाती है सीमान्त आगम, औसत आगम या कीमत से कम होता चला जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. आगम से आप क्या समझते हैं? यह लाभ से किस प्रकार भिन्न है?
2. यह मानकर कि उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत एक जैसी रहती है, काल्पनिक आंकड़ों के आधार पर कुल आगम, सीमान्त आगम और औसत आगम के बारे में एक तालिका बनाइए।
3. एक ऐसे बाजार की स्थिति में जहां फर्म अधिक बिक्री कीमत कम करके ही कर सकती है, कुल आगम, औसत आगम व सीमान्त आगम के बारे में एक काल्पनिक तालिका बनाइए।
4. निम्नलिखित तालिका पूरी कीजिए:

Q	P	TR	AR	MR
1	5			
2	5			
3	5			
4	5			
5	5			

5. निम्नलिखित तालिका पूरी कीजिए:

Q	P	TR	AR	MR
1	5			
2	4			
3	3			
4	2			

6. निम्नलिखित तालिका से सीमान्त आगम ज्ञात कीजिए:

Q	AR	MR
1	25	
2	23	
3	21	
4	19	
5	18	
6	15	

7. निम्नलिखित तालिका पूरी कीजिए:

P	Q	TR
10	-	100
11	9	-
12	-	96
13	7	-
14	-	84
15	5	-
16	-	64

योग्यता विस्तार

पाठ 14 में आप रेखाचित्र या ग्राफ के विभिन्न पहलुओं के बारे में पढ़ चुके हैं। आइए, इस जानकारी से हम आगम के विभिन्न मापों के रेखाचित्र बनाए।

हम बाजार की उन दो विभिन्न स्थितियों को लेगें जिनका वर्णन हम इस पाठ में कर चुके हैं।

(अ) स्थिर कीमत पर अधिक बिक्री:

तालिका 19.12

Q	P	TR	AR	MR
1	200	200	200	200
2	200	400	200	200
3	200	600	200	200
4	200	800	200	200
5	200	1000	200	200

आइए, तालिका 19.12 में दिए गए आंकड़ों के आधार पर कुल आगम (TR), औसत आगम (AR) और सीमान्त आगम (MR) वक्र खींचें। हम X-अक्ष पर उत्पादन (Q) तथा Y-अक्ष पर आगम (Revenue) ले रहे हैं।

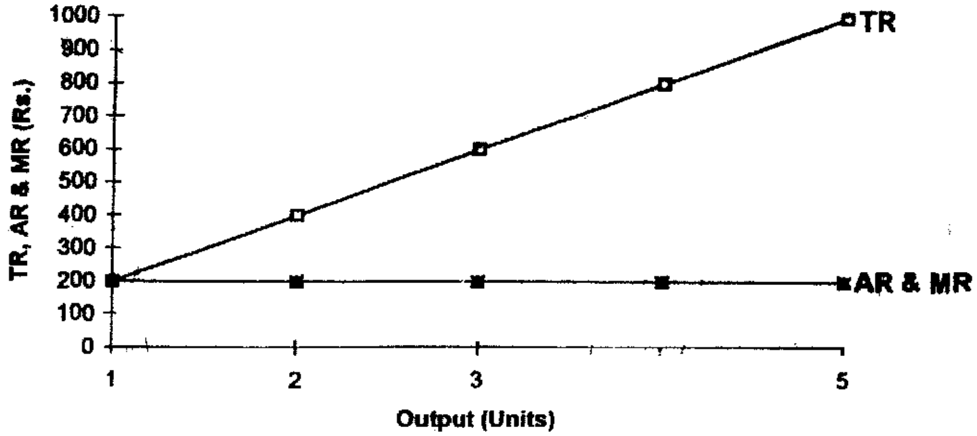

रेखाचित्र 19.1 : TR, AR और MR वक्र

ऊपर दिए गए रेखाचित्र में हम निम्नलिखित बातें देखते हैं:

(i) कुल आगम वक्र बाएं से दाएं ऊपर की ओर जा रहा है, इसका अर्थ है कि उत्पादन का स्तर बढ़ने के साथ-साथ कुल आगम भी निरन्तर बढ़ रहा है।

(ii) औसत आगम वक्र X-अक्ष के समानान्तर है क्योंकि उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कीमत एक-सी ही रहती है।

(iii) सीमान्त आगम वक्र भी X-अक्ष के समानान्तर है क्योंकि कीमत स्थिर होने के कारण उत्पादन में वृद्धि, कुल आगम में एक समान शुद्ध वृद्धि लाती है।

(iv) सीमान्त आगम और औसत्त आगम वक्र एक जैसे हैं क्योंकि उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर औसत आगम और सीमान्त आगम एक समान हैं।

उपरोक्त सभी बातें केवल उसी बाजार में ठीक पाई जाती हैं जिसमें उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर एक ही कीमत रहती है। यदि कीमत स्थिर न हो तो विभिन्न आगम वक्रों का रूप भी अलग-अलग होगा। ऐसा दूसरे प्रकार के बाजार में पाया जाता है।

(ब) अधिक बिक्री कम कीमत पर ही संभवः

Q	P	TR	AR	MR
1	100	100	100	100
2	90	180	90	80
3	80	240	80	60
4	70	280	70	60
5	60	300	60	20
6	50	300	50	0
7	40	280	40	-20

आइए, उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर कुल आगम (TR), औसत आगम (AR) और सीमान्त आगम (MR) वक्र बनाए।

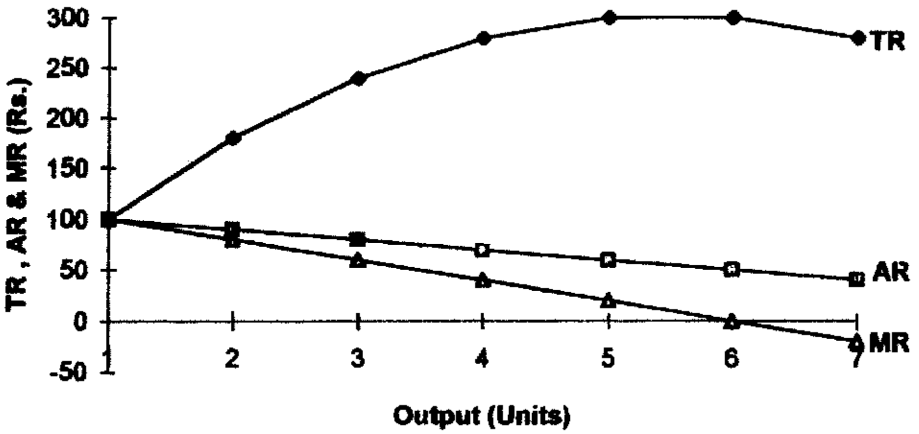

रेखाचित्र 19.2: TR, AR और MR वक्र

रेखाचित्र 19.2 में हम निम्नलिखित बातें देखते हैं:

(i) कुल आगम (TR) वक्र उत्पादन की 5 इकाई तक ऊपर की ओर जा रहा है। 5 और 6 इकाई के बीच यह स्थिर है, 7 इकाई और उसके पश्चात् यह निरन्तर नीचे की ओर जा रहा है।

(ii) औसत आगम (AR) वक्र निरन्तर नीचे की ओर जा रहा है।

(iii) सीमान्त आगम (MR) वक्र भी निरन्तर नीचे की ओर जा रहा है। X-अक्ष पर 6 इकाई के उत्पादन स्तर पर सीमान्त आगम शून्य है। 6 इकाई के पश्चात् सीमान्त आगम वक्र X-अक्ष के नीचे चला जाता है, क्योंकि इस उत्पादन स्तर के पश्चात् सीमांत आगम शून्य से कम यानी ऋणात्मक हो जाता है।

उत्तर

पाठगत प्रश्न 19.1

(i) (स) (ii) (स) (iii) (स) (iv) (अ)

पाठगत प्रश्न 19.2

(i) (अ) (ii) (स) (iii) (अ)

पाठगत प्रश्न 19.3

(i) कुल आगम (ii) 25 रु. (iii) कम (iv) स्थिर (v) ऋणात्मक।

पाठांत प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 19.3 (अ) और 19.7
2. पढ़िए अनुभाग 19.4, 19.5 और 19.6
3. पढ़िए अनुभाग 19.4, 19.5 और 19.6
4.

TR=P×Q	AR=TR/Q	MR
5	5	5
10	5	5
15	5	5
20	5	5
25	5	5

5.

TR	AR	MR
5	5	5
8	4	3
9	3	1
8	2	-1

6.

TR=AR×Q	MR
25	25
46	21
63	17
76	16
90	14
90	0

7.

P	Q	TR
10	10	100
11	9	99
12	8	96
13	7	91
14	6	84
15	5	75
16	4	64